Election Commission of India

NEWS PAPER: **JANSATTA(H)** DATE : 10 NOV 2012

वादों का क्या?

चुनावी वादे तो लोगों को झांसा देने के लिए ही किए जाते हैं। वोट मिली और सरकार बनी तो फिर वादों का क्या? गीतकार ने फिल्मी गीत में भी इस हकीकत को उभारा था- कसमें, वादे, प्यार, वफा सब बातें हैं, बातों का क्या? पश्चिम बंगाल में दीदी ने भी इस गीत के शब्दों को चरितार्थ कर दिखाया है।

ममता बनर्जी ने मां, माटी और मानुष की दुहाई देकर सत्ता पाई थी। लेकिन सत्ता मिलने के बाद इन मुद्दों पर उनका नजरिया बदलने में वक्त नहीं लगा। पहले सिंगूर और फिर नंदीग्राम में जमीन अधिग्रहण के सवाल पर खड़े किए गए आंदोलन ने उन्हें सत्ता तक पहुंचाया था। पर हाल में वीरभूमि जिले के लोबा गांव में पुलिस और गांववालों के बीच हिंसक झड़प में कई दर्जन लोग घायल हो गए तो भी ममता ने 24 घंटे तक इस घटना पर अपना मुंह नहीं खोला। अगले दिन बड़ी मंजी हुई टिप्पणी कर डाली। फरमाया कि घटना में न गांव वालों का कसूर था और न पुलिस वालों का। विपक्ष की साजिश बता अपनी जिम्मेवारी से मुंह मोड़ने में तनिक नहीं हिचकीं। इस गांव में भी किसानों की नाराजगी जमीन अधिग्रहण को लेकर ही है। खनन के काम से जुड़ी कंपनी के साथ टकराव चल रहा है गांववालों का। कंपनी की एक मशीन गांववालों ने कब्जा रखी है। उसी को छुड़ाने के लिए पहुंची थी गांव में पुलिस। ममता की माने तो पुलिस पर हमले के लिए गांव वालों को उकसाया गया था। ममता भूल गईं कि इलाके की गांव पंचायत पर उन्हीं की पार्टी का कब्जा ठहरा। फिर किसने उकसाया होगा गांववालों को। ममता तो पुलिस फायरिंग के आरोप को ही नकार रही हैं। यह बात अलग है कि बयान में पुलिस वालों की कोई गलती नहीं होने की बात करने वाली ममता ने पुलिस कप्तान का तबादला कर दिया। घटना के अगले दिन ममता की सरकार के उद्योगमंत्री पार्थ चटर्जी वहां पहुंचे तो जरूर पर घायल गांव वालों के हालचाल तक जानने की जरूरत नहीं समझी। उन्होंने भी ठीकरा माकपा और कांग्रेस के सिर फोड़ दिया। सूबे के लोग अब एक ही सवाल कर रहे हैं कि कहां खो गई मां, माटी और मानुष की सरकार।